दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय

''इस सुन्दर अनुवाद में श्रील प्रभुपाद ने गीता की भक्तिमयी आत्मा को समझा है और श्रीकृष्ण चैतन्य की परम्परा में मूल पाठ की विस्तृत टीका प्रस्तुत की है।''
डॉ. जे स्टिलसन जूडाह

धर्म इतिहासों के प्रतिष्ठित प्रोफेसर
तथा पुस्तकालय निर्देशक
ग्रेजुएट थियोलॉजिकल यूनियन, बर्कले

''पाठक चाहे भारतीय अध्यात्म में कुशल हो या नहीं, भगवद्गीता यथारूप का पठन नितान्त लाभप्रद होगा क्योंकि वह इससे गीता को उसी प्रकार समझ सकेगा, जिस प्रकार अधिकांश हिन्दू समझते हैं।''
डॉ. फ्रैन्क्वा शेनिक

इंस्टीट्यूट आफ पॉलिटिकल स्टडीज
पेरिस

''भगवद्गीता यथारूप अत्यन्त गम्भीर तथा सशक्त अनुभूति से युक्त अति उत्तम व्याख्यायित ग्रंथ है। गीता पर लिखा हुआ ऐसा मुखर तथा शैलीपूर्ण किसी अन्य ग्रंथ का दर्शन नहीं हुआ। यह ग्रंथ आगामी दीर्घकाल तक आधुनिक मनुष्य के बौद्धिक तथा नैतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये रखेगा।''
डॉ. एस. शुक्ल

भाषाविज्ञान के सहायक प्रोफेसर
जॉर्ज टाउन विश्वविद्यालय

विषय-सूची